ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-12* March-2021
Anthology : The Research

विकलांगता और कला– एक दृष्टिगत अध्ययन के रूप में

Disability and The Art : As A Visual Study

Paper Submission: 01/03/2021, Date of Acceptance: 20/03/2021, Date of Publication: 23/03/2021

जितेंद्र सिंह
प्रवक्ता,
कला विभाग,
मुरली मनोहर इंटर कॉलेज,
ईशपुर टील शामली,
उ0प्र0, भारत

सारांश

विकलांग व्यक्तियों की कलाओं से संवाद स्थापित करने के उपरांत एयह शोध कार्य करने का विचार मन में आया ।इनके कला.कार्य अत्यंत ही सराहनीय व विचारणीय है। निश्चय ही अद्भुत क्षमता थी उनमें। जो सामान्यतः प्रेरणा प्रदान करते हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य विकलांग व्यक्तियों को कला व्यवसाय की ओर प्रेरित कर विकास की प्रक्रिया में आगे बढ़ाना और उनके नकारात्मक दृष्टिकोण को सकारात्मकता मे बदलना है। इसके अलावा विभिन्न कलाओं में उनके योगदान को उजागर करना है। विकलांगता और बहु विकलांगता चाहे कितनी भी ज्यादा गंभीर क्यों न हो ये व्यक्ति उससे उभरकर समाज में सम्मान व स्वाभिमान प्राप्त कर सकते हैं।

After communicating with the arts of persons with disabilities, the idea of doing this research work came to mind. Their art work is very commendable and worth considering. He certainly had an amazing ability. Who usually provide inspiration. The main objective of this research is to motivate persons with disabilities towards the art profession and to move forward in the process of development and change their negative attitude to positivity. Also his contribution to various arts is to be highlighted. Disability and multiple disabilities, however serious they may be, can emerge from them and earn respect and self-respect in the society.

मुख्य शब्द : विकलांग व्यक्तियों, सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण, सभ्यता, संस्कृति और विकास।

Persons with Disabilities, Aesthetic Perspectives, Civilization, Culture and Development.

प्रस्तावना

पुरातन काल से ही विकलांग व्यक्तियों का समाज के लिए अतुल्य योगदान रहा है यह कुछ क्षेत्रों में तो इतना मूल्यवान् साबित हुआ है कि सामान्य व्यक्ति भी यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि ये लोग वास्तव में विकलांग थे या नहीं। अतः पुरातन काल से ही विकलांग व्यक्ति अपने अन्दर छिपी प्रतिभा का परचम दिखाकर समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बनते रहे है। इतिहास के परिप्रेक्ष्य में अगर झांककर देखा जाये तो ऐसे अनेको उदाहरण दिखायी देगें।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण विकसित करना
2. ललित कलाओं के प्रति जागरूक कराना
3. व्यवसाय के रूप में आजीविका चलाने के लिए प्रेरित करना
4. जनसामान्य में भावनात्मक दृष्टिकोण प्रेरित करना
5. रूढ़िवादिता को तोड़ना
6. सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना
7. क्रियात्मक पक्ष विकसित कराना
8. सृजनात्मकता का दृष्टिकोण को प्रेरित करना

मनुष्य की सभ्यता, संस्कृति और विकास के साथ–साथ विकलांगता की समस्या भी पहले से ही चली आ रही है। आदिकालीन मनुष्य जब जंगलों में रहकर जानवरों के शिकार से अपना भरण–पोषण करता था तब अक्सर ऐसा होता था कि कोई हिंसक पशु मनुष्य को घायल कर देता, जिससे वह आजीवन विकलांग हो जाता था। विकलांग होने का एक प्रमुख कारण प्राकृतिक आपदाएं भी थी। उस समय विकलांगता का अनुमान हम फ्रांको –केंताब्रियन क्षेत्र की गुफाओं में बने हाथों के छापा– चित्रों से लगा सकते हैं। जहां आदिकालीन मनुष्यों की कटी अंगुलियां छापा–चित्रों मे स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है ।अतः –विकलांगता और कला– विषय पर दृष्टिपात करने से पहले हम

विकलांगता की प्राचीनता और समय–समय पर व्यक्तियों के योगदान पर एक दृष्टिगत अध्ययन करेंगे।

जैसे–जैसे मनुष्य सभ्य होता गया, वैसे–वैसे ही वह संगठित होता गया। संगठन से मनुष्य की शक्ति बढ़ी और इससे मनुष्य में सामुदायिक रूप से झगड़ों की संभावनाएं बढने लगी। इसी प्रकार सामूहिक झगड़े मनुष्य की विकलांगता केभी कारण बने।समूहों में होने वाले झगड़ों ने युद्धों की शक्ल ले ली ।बढ़ते युद्धों और अन्य कारणों ने विकलांगों की आबादीको तेजी से बढ़ाया। दूसरे साधन सीमित थे ।मनुष्य के दिल में विकलांगो के लिए जगह भी सीमित थी। फलतः ये लोगसमाज पर बोझ माने जाने लगे। इनका भरण –पोषण भी कठिन होने लगा व इनका कष्टमय हो गया। अतः इनसे मुक्तिपाने के उपाय निकाले जाने लगे। प्राचीन काल में यूनान और स्पार्टा देशों मे नेत्रहीनों ,अस्थि विकलांगों और मानसिक मंदलोगों को जबरन पानी में डुबोकर मार दिया जाता था । अलग–अलग जगहों पर इन से मुक्ति पाने के लिए अलग–अलग तरीके अपनाए जा रहे थे ।

स्पेन में कई अंधे कुए बनाए गए जिनमें इन्हें डाल दिया जाता था ।तत्कालीन समाज इन्हें अधिकार नहीं देता था ।यहमान्यता थी कि यदि ये लोग जिंदा रहेगें ,तो उपलब्ध सीमित संसाधनों जैसे अनाज ,वस्त्र आदि का उपयोग करेंगे,जिससे सामान्य जनता के लिए संसाधनों की कमी होगी क्योंकि युद्ध ,शिकार आदि में इनकी उपयोगिता नहीं थी। यहभी मान्यता थी कि यदि यह लोग विवाह करेंगे तो उनकी संतान भी विकलांग ही होगी। जन्मांध और मंदबुद्धि लोगों केबारे में तो यह धारणा एक लंबे काल तक प्रबल रही। लोग अपनी जाति और वंश की शुद्धता बनाए रखना चाहते थे यहांतक कहा जाता है कि प्रख्यात दार्शनिक सुकरात ने भी विकलांग बच्चों को जन्मतरू ही मार देने के बारे में कहा।

भारत में भी कुछ इस प्रकार की मान्यताएं थी जैसे कि विकलांगता पूर्व –जन्म का पाप है, यहाँ विकलांगों को मार देने का रिवाज तो कभी नहीं रहा लेकिन इनको अधिकारों से वंछित कर देने के उदा. प्राचीन काल से ही मिलते हैं ।महाभारतमें धृतराष्ट्र ज्येष्ठ पुत्र थे ।मात्र नेत्रहीन होने के कारण छोटे भाई पांडू राजा बने ।जब पांडु की मृत्यु हुई तो विकल्प न होनेपर धृतराष्ट्र राजा बन पाए। इसी प्रकार मानसिक रूप से विकलांगों को संपत्ति में कोई हिस्सा नहीं मिलता था व शिक्षा मेंसामान्य की अपेक्षा विकलांगों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण की प्रथा भी प्रचलित थी।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनेक ऐसे विकलांग व्यक्ति हुए ,जिन्होंने अपनी अच्छाईयों और श्रेष्ठ कार्यों के कारण जीवन के अंतिमचरण में आदर और उच्च स्थान पाया। वेदों में नेत्रहीन विद्वान ऋषि दीर्घतमा का जिक्र है। ईशा पूर्व 1552 में मिस्र में डिडमस नामक विद्वानहुए, जिन्होंने अरबी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया ।वे पूर्णतः नेत्रहीन थे । उन्होंने लकड़ी को खोद– खोद कर किताबें लिखी। उनकी इस अद्भुत लाइब्रेरी की लोगों ने प्रशंसा की। संभवत यह नेत्रहीनों की प्रथम लाइब्रेरी थी । इसी प्रकार प्रतिकूल परिस्थितियों में भी होमर ने यूनान में अपनी मधुर काव्य रचनाएं वहां की जनता को अपने मधुर कंठ से सुना कर उनका दिल जीता।

समकालीन परिदृश्य

कला और विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त करने वाले व्यक्ति– भौतिकी के क्षेत्र में सबसे समझदार नाम आइंस्टीन , मानसिक रूप से बहुत कमजोर माने जाते थे इस कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा भी पूरी नहीं हो पाई बाद में यही आइंस्टीन दुनिया के महान वैज्ञानिक बने दुनिया के शीर्ष वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग चलने फिरने से लाचार थे।वह कुछ बोल भी नहीं पाते लेकिन हॉकिंग ने दुनिया के निर्माण के सिद्धांत समेत कई ऐसे खोज की जिन्होंने साइंस की दुनिया को हमेशा के लिए बदल दिया। ऐसे ही एक नाम हेलेन केलर दुनिया की पहली ग्रेजुएट महिला मानी जाती है। वह देख और सुन नहीं सकती इसके बावजूद उन्होंने न सिर्फ अपनी पढ़ाई पूरी की बल्कि वह अमेरिका की शीर्ष लेखिका और शिक्षिका साबित हुई।आंखों की रोशनी ने होने के बावजूद रविंद्र जैन संगीत की महान हस्ती है, उनके गाए जाने वाले भजन आज घर–घर में सुने जाते हैं रामानंद सागर के रामायण से जैन कोख्याति मिली, उन्होंने कई फिल्मों में भी संगीत दिया। अमेरिका के सबसे लोकप्रिय राष्ट्रपति रूजवेल्ट एक एक्सीडेंट के कारण चलने फिरने से लाचार हो गए, इसके बावजूद उनकी लीडरशिप और कामयाबी दुनिया के लिए मिसाल बनी ।

सुधा चंद्रन का एक पाव नकली है, इसके बावजूद उन्होंने अपने डांस और अभिनय प्रतिभा से लाखों लोगों को मुरीद बनायाहॉलीवुड के टॉप हीरो टॉम क्रूज एलेक्सिया से पीड़ित थे, इस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को कुछ भी सीखने में दिक्कत होतीहै इससे इसके बावजूद वे दुनिया किसी मसहूर एक्टर में शुमार हैं ।

विकलांगता के क्षेत्र में आर्थर कमनाग का नाम बहुत प्रसिद्ध है ।यह आयरलैंड निवासी जब पैदा हुआ तो ने इसकी नटांगे थी न बांहें, फिर भी उन्होंने एक नाव पर अकेले पूरे संसार का भ्रमण किया और अपने कंधे पर लगे पेन के साथ उसभ्रमण का पूर्ण विवरण लिखा ।लार्ड लनसन संसार के एक प्रसिद्ध जनरल थे उनकी मात्र एक आंख थी और एक बांह, फिरभी वह एक ससक्त राष्ट्रपति थे। राष्ट्रपति फ्रैंकलिन राजराइट को बाल्यावस्था से ही पक्षाघात था। फिर भी वे अपनेसंकल्प और अच्छे व्यवहार के कारण अमेरिका के राष्ट्रपति बने। लार्ड ब्रायन के पांव खराब थे, जिन्होंने साहित्यिक जगतमें अपना नाम एक अच्छे लेखक के रूप में छोड़ा ।विथेवन को कौन नहीं जानता, संसार के इतिहास में संगीत के लिए जोकार्य उन्होंने किया और जो देन उन्होंने दी, विश्व में आज तक कोई नहीं दे सका। वह बचपन से ही दमा रोग से ग्रस्त औरबिल्कुल बहरे थे।इसके बावजूद भी नेत्रहीनों और विकलांगों के बारे में जनमान्यताओं में कोई परिवर्तन नहीं आया। काफी समय तक कुछनेत्रहीनों को संगीत सुनाने और समृद्ध व्यक्तियों को मनोरंजन कराने के लिए रखा जाने लगा। भारत में भी सूरदास नामकनेत्रहीन विद्वान हुए, जिन्होंने काव्य की अद्भुत रचनाएं की उनकी रचनाएं पढ़कर लोग उनके जन्मांध होने पर भीप्रश्नचिन्ह लगाने

लगे। तैमूर लंग और राणा सांगा ने वीरता से विकलांगता की पराजय की।

विकलांगता की समस्या को मानव और प्रकृति दोनों ही की ही तरफ से बढ़ावा मिल रहा था, क्योंकि मानव वैज्ञानिक उपयोगिता के आधार पर युद्धक सामग्री के द्वारा अपने आप को ऊंचा साबित करने की होड़ में विकलांगता की समस्या को बढ़ावा दे रहा था। प्रकृति के प्रकोप व मानव का प्रकृति के प्रति स्वार्थ भी इस समस्या का कारण था। विकलांगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए रोजगार दिए जा रहे हैं लेकिन भारत में नौकरियों में विकलांगों का प्रतिशत गिरताजा रहा है ।सर्वे के अनुसार 1981 में जब अंतर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष मनाया गया था, तो उस वर्ष 12,500 विकलांगों कोरोजगार दिया गया था ।उसके बाद 1995 में 37 लोगों को रोजगार दिया जा सका। 1995 के बाद के आंकड़े इस देश कीसरकार के पास उपलब्ध नहीं है ।विकलांगों की आबादी कुल आबादी के अनुरूप बढ़ती ही चली जा रही थी। रोजगार केंद्रों परविकलांग बेरोजगारों की लाइन बढ़ती चली जा रही थी ।1994 में 340000 विकलांग व्यक्ति रोजगार केंद्रों पर पंजीकृत हुए।1995 में इनकी संख्या 13000 की वृद्धि हो गई ।दूसरी और 1994 के मुकाबले 1995 में विकलांगों को दी जाने वालीनौकरियों की संख्या मे 700 की कमी आ गई।

निष्कर्ष

उपरोक्त सर्वेक्षणात्मक आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि जनसंख्या की बढ़ोतरी के साथ विकलांगों के लिए रोज गारोंमें कमी आती जा रही है ,लेकिन अगर हम इतिहास के परिदृश्य मे झाकते हैं तो दिखाई देगा कि किस प्रकार विकलांग व्यक्तियों ने परिस्थितियों का सामना करके बुलंदियों को छुआ है। जिस प्रकार चित्रकला मूर्तिकला में विनोद बिहारी मुखर्जी ने अपनी अभूतपूर्व प्रतिभा का प्रदर्शन किया व श्रवणहीन सतीश गुजराल ने चित्रकलाऔर मूर्तिकला के अलावा वास्तु कलामें भी असाधारण प्रदर्शन किया व मुख बधिर प्रभा शाह ने चित्रकला में ख्याति प्राप्त की है वास्तव में किसी बच्चे का विकलांग होना माता पिता को ही नहीं पूरे परिवार और समुदाय में रहने वाले लोगों के विचारों को प्रभावित करता है। बच्चे के पैदा होने के बाद अगर वह विकलांगता दर्शाता है तो उसके प्रति माता–पिता के विचारों में बदलाव आने लगता है ।और वह परिस्थिति का सामना नहीं कर पाते लेकिन धीरे–धीरे समय बदलने के अनुसार वे बच्चे के साथ अनुकूलन करने लगते हैं इस समय उनको सलाहकार की जरूरत होती है जो उनको बच्चों के प्रति सही मार्गदर्शन करा सके। पहले के अनुसार आज के समय में विकलांगता पर बहुत जोरदिया जा रहा है सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं शिक्षण के हर प्रतिमानो को ध्यान में रखते हुए इन बच्चों के शिक्षणप्रशिक्षण और व्यवसाय के लिए कार्य कर रही है अनेक जगह पर इन व्यक्तियों के लिए व्यवसायिक ईकाई खोली गई हैजहां पर इन बच्चों के द्वारा कार्य करा कर तैयार सामान बाजार में भेजा जाता है इससे यह सिद्ध हो जाता है कि यह बच्चेभले ही सामान्य नहीं हो सकते किंतु अपने आप को आत्मनिर्भर बना कर सामान्य की तरह जीवन व्यतीत कर सकते हैं औरइसी प्रकार कला इनके लिए आत्मनिर्भरता के लिए अच्छा स्रोत साबित हो सकता है यही नहीं वे कला को अपने व्यवसाय केरूप में भी अपना सकते हैं और अपनी आजीविका का साधन बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्री विनोद मिश्र विकलांग विभूतियों की जीवन गाथाएं*
2. *श्री विनोद मिश्र विकलांग के लिए रोजगार*
3. *डॉ उमा तुली शारीरिक विकलांग बच्चों का शिक्षा की मुख्यधारा में सम्मिलन*
4. *बीएन शर्मा शिक्षा मनोविज्ञान साहित्य प्रकाशन आगरा*
5. *समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं*
6. *श्री विनोद मिश्र विश्व की विकलांग विभूतियां पेज नंबर 21*
7. *श्री विनोद मिश्र विश्व के विकलांग भूतिया पेज नंबर 26*